संत कवि भारती

<u>प्रस्तावना:-</u>

बच्चो, हिन्दी भाषा के संत कवियों ने ना सिर्फ भगवान के गुणों का बखान किया अपितु अपने दोहों के जरिए सामान्य जनता को नीति और मूल्यों का पाठ भी पढ़ाया |

जिस कवि ने सबसे अधिक नीति-मूल्यों को अपनी रचना का मूल बनाया,वह थे रहीम.....

रहीम मध्यकालीन सामंतवादी संस्कृति के कवि थे। रहीम का व्यक्तित्व बहुमुखी प्रतिभा-संपन्न था। वे एक ही साथ सेनापति, प्रशासक, आश्रयदाता, दानवीर, कूटनीतिज्ञ, बहुभाषाविद, कलाप्रेमी, कवि एवं विद्वान थे। रहीम सांप्रदायिक सदभाव तथा सभी संप्रदायों के प्रति समादर भाव के सत्यनिष्ठ साधक थे। वे भारतीय सामासिक संस्कृति के अनन्य आराधक थे। रहीम कलम और तलवार के धनी थे और मानव प्रेम के सूत्रधार थे।

आज हम उनके द्वारा रचित तीन दोहें पढ़ने वाले हैं----

<u>दोहों का अर्थ:-</u>

१. रहिमन धागा प्रेम का मत तोड़ो चटकाय |
टूटे से फिर न जुरै, जुरै गाँठ परि जाय||१||
अर्थ:- प्रस्तुत दोहे में रहीम ने विश्वास के टूटने से क्या हो सकता है इस विषय में कहा है|
टूटे हुए धागे को जब हम जोड़ने की कोशिश करते हैं तब वह धागा जुड़ तो जाता है लेकिन उसमें गाँठ पड जाती है |
उसी प्रकार से जब भी हम किसीसे अपने प्रेम संबंधों को तोड़ देते हैं या जब हम किसीका विश्वास तोड़ देते हैं, तब वह व्यक्ति शायद में माफ़ भी कर दे फिर भी उसके मन में इस बात की टीस हमेशा के लिए रह जाती है | वह उस घटना या बात को भूला नहीं पाता है|
इसी कारण रहीम कहते हैं कि हमें किसी व्यक्ति से अपने संबंधों को इस प्रकार से नहीं तोड़ना चाहिए कि वे कभी जुड़े ही ना!!!
उसी प्रकार विश्वास को भी नहीं तोड़ना चाहिए |

२. तरुवर फल नहिं खात हैं, सरवर पियाहिं न पान |
कहि रहीम परकाजहित , संपति संचहिं सुजान||२||
अर्थ:- सज्जनों की विशेषता बताते हुए रहीम यहाँ कह रहे हैं कि सज्जन पेड़ और तालाब के समान होते हैं| जिस प्रकार पेड़ पेड़ ना ही फल अपने लिए निर्माण करता है है और ना ही स्वयं उसे खाता है| तालाब भी पानी अपने लिए नहीं वरन दूसरों के लिए जमा करता है| ये दोनों ही निस्वार्थ भावना के प्रतीक हैं जो अपने लिए नहीं अपितु औरों के लिए अपना सर्वस्व लूटा देते हैं, और किसीसे कुछ भी अपेक्षा नहीं करते हैं|
उसी प्रकार सजन्न व्यक्ति भी किसी से कुछ भी अपेक्षा नहीं करते हैं | बल्कि बिना कुछ कहे वे अपना सर्वस्व दूसरों पर लूटा देतें हैं |
हमारे समाज में अगर हम ध्यान से देखें से देखें तो ऐसे इने-गिने लोग ही हमें दिखेंगे जो अपनी संपत्ति का उपयोग दूसरों की भलाई के लिए करते हैं | जैसे बाबा आमटे, प्रकाश आमटे जिन्होंने अपना संपूर्ण जीवन गरीबों की सेवा में बिता दिया बिना किसी अपेक्षा के.....

३. टूटे सुजन मनाइए, जौ टूटे सौ बार |
रहिमन फिरि-फिरि पोइए, टूटे मुक्ताहार||३||
अर्थ:- अपने प्रथम दोहे में रहीम ने कहा है कि अगर प्रेम संबंधों में कोई झगड़ा हो जाए तो उनमें गाँठ पड जाती है |
परन्तु अपने इस दोहे में रहीम कहते हैं कि अगर कोई अच्छा और सच्चा व्यक्ति आपसे नाराज़ हो तो उसे तुरंत मनाईए | सज्जन व्यक्ति मोतियों के समान होते हैं | मोतियों का हार टूट गया इसलिए कोई मोतियों को फेंकता नहीं है | बल्कि जितनी बार वह हार टूट जाता है हम उतनी ही बार उसे गूँथते हैं |
उसी प्रकार से जब सज्जन हमसे रूठ जाते हैं तब वह हमारी सबसे बड़ी हानि है |इसी कारण अपने अहंकार के चलते अगर हमने उन्हें नहीं मनाया तो नुकसान (हानि) उनका नहीं हमारा ही होगा| इससे ना ही हम उनसे कुछ सीख पाएँगे और ना ही हम उनके गुणों को अपना पाएँगे | इसी कारण से हमें अपने अभिमान को छोड़ कर रूठेहुए सजनों को हमें मनाना चाहिए |

उद्देश्य:-

रहीम के दोहे धर्म से बढकर हैं | उन्होंने जीवन जीने के तरीके के बारे में बताया है | र**हीम** के दोहों में सामाजिक जीवन व व्यवहार के नीति निर्देश भी हैं और ऐसी प्रेरणा भी जो मनुष्य को सत्मार्ग पर चलने के संस्कार दे|

आपकी पाठ्यपुस्तक में दिए हुए तीनों दोहे हमें सज्जनता तथा प्रेम का पाठ पढाते हैं |

जब भी हम रिश्तों में अहंकार तथा स्वार्थ लाते हैं तब वह रिश्ता ज्यादा दिनों तक टिक नहीं पाता है | उस रिश्ते में गाँठ पड़ ही जाती है |

इसीलिए हमें रिश्ता निभाते समय सज्जनों की तरह उसे निभाना चाहिए| हमें कभी-भी किसी कोई अपेक्षा नहीं करनी चाहिए | जिस प्रकार सज्जन किसी से अपेक्षा किए बगैर ही अपना सब कुछ लूटा देते है, हमें भी इसी निस्वार्थ भाव से सभी की मदद करनी चाहिए |

फिर भी अगर कभी मनमुटाव आ भी जाए तो हमें तुरंत अपने अहंकार को छोड़ कर माफ़ी मांग लेनी चाहिए | हेम्न्मोतियों को समेटना है नाकि सब कुछ बिखरना है |

जब भी अह्मारा हमारे किसी दोस्त से झगड़ा हो जाए तब आगे जाकर माफ़ी माँगने हमन हिचकिचाना नहीं चाहिए | इससे हमारा रिश्ता भी मजबूत रहता है, और उनमें गाँठे नहीं लगती |

हमें परोपकार को ही अपना स्वभाव बनाना चाहिए | प्यार बाँटने से बढ़ता है|

पुष्टि-धन

क्या आप जानते हैं कि रहीम सिर्फ कवि ही नहीं थे बादशाह के दरबार में थे| अकबर के दरबार में इनका महत्त्वपूर्ण स्थान था। रहीम अकबर के नवरत्नों में से एक थे। गुजरात के युद्ध में शौर्य प्रदर्शन के कारण अकबर ने इन्हें 'ख़ानखाना' की उपाधि दी थी। रहीम अरबी, तुर्की, फ़ारसी, संस्कृत और हिन्दी के अच्छे ज्ञाता थे। इन्हें ज्योतिष का भी ज्ञान था। रहीम की ग्यारह रचनाएं प्रसिद्ध हैं। इनके काव्य में मुख्य रूप से शृंगार, नीति और भक्ति के भाव मिलते

हैं। 70 वर्ष की उम्र में 1626 ई. में रहीम का देहांत हो गया। अब्दुर्रहीम ख़ाँ, ख़ानख़ाना मध्ययुगीन दरबारी संस्कृति के प्रतिनिधि कवि थे। अकबरी दरबार के हिन्दी कवियों में इनका महत्त्वपूर्ण स्थान है। ये स्वयं भी कवियों के आश्रयदाता थे। केशव, आसकरन, मण्डन, नरहरि और गंग जैसे कवियों ने इनकी प्रशंसा की है।

इस विषय में अधिक जानकारी आप-

http://hi.bharatdiscovery.org/india/%E0%A4%B0%E0%A4%B9%E0%A5%80%E0%A4%AE

प्राप्त कर सकते हैं|रहीम के कुछ अन्य दोहें पढ़ते हैं:-

बिगरी बात बने नहीं, लाख करो किन कोय।
रहिमन बिगरे दूध को, मथे न माखन होय॥6॥

अर्थ: जब बात बिगड़ जाती है तो किसी के लाख कोशिश करने पर भी बनती नहीं है। उसी तरह जैसे कि दूध को मथने से मक्खन नहीं निकलता।

एकहि साधै सब सधै, सब साधे सब जाय।
रहिमन मूलहि सींचबो, फूलहि फलहि अघाय॥15॥

अर्थ: एक को साधने से सब सधते हैं। सब को साधने से सभी के जाने की आशंका रहती है। वैसे ही जैसे किसी पौधे के जड़ मात्र को सींचने से फूल और फल सभी को पानी प्राप्त हो जाता है और उन्हें अलग-अलग सींचने की जरूरत नहीं होती है।

रहिमन पानी राखिये, बिन पानी सब सून।
पानी गये न ऊबरे, मोती, मानुष, चून॥26॥

अर्थ: इस दोहे में रहीम ने पानी को तीन अर्थों में प्रयोग किया है। पानी का पहला अर्थ मनुष्य के संदर्भ में है जब इसका मतलब विनम्रता से है। रहीम कह रहे हैं कि मनुष्य में हमेशा विनम्रता (पानी) होना चाहिए। पानी का दूसरा अर्थ आभा, तेज या चमक से है जिसके बिना मोती का कोई मूल्य नहीं। पानी का तीसरा अर्थ जल से है जिसे आटे (चून) से जोड़कर दर्शाया गया है। रहीम का कहना है कि जिस तरह आटे का अस्तित्व पानी के बिना नम्र नहीं हो सकता और मोती का मूल्य उसकी आभा के बिना नहीं हो सकता है, उसी तरह मनुष्य को भी अपने व्यवहार में हमेशा पानी (विनम्रता) रखना चाहिए जिसके बिना उसका मूल्यह्रास होता है।

मूल्यांकन के लिए प्रश्न:-

१) प्रेमरूपी धागा टूटने से क्या होता है?

अ. दो टुकड़े हो जाते हैं

आ. गाँठ पड़ जाती है

इ. लंबा हो जाता है

ई. छोटा हो जाता है

२) सज्जन लोगों की तुलना किससे की गई है?

अ. पर्वत और बादल से

आ. पेड़ और तालाब से

इ. घर और मन्दिर से

ई. समुद्र और बर्फ से

३) मोतियों की माला टूट जाने पर हम क्या करते हैं?

अ. फेंक देते हैं

आ. पुनः पिरोते हैं

इ. टूटी हुई माला रख देते हैं

ई. कुछ भी नहीं करते हैं

४) रूठे हुए सज्जनों को हमें क्यों मनाना चाहिए?

अ. क्योंकि हम उनसे अच्छी बातें सीख सकते हैं

आ. क्योंकि वे हमें घूमाने के लिए ले जाएँगे

इ. क्योंकि वे अच्छा खाना बनाते हैं

ई. क्योंकि वे सारा काम करते हैं

worksheet:-

१. आपके अनुसार रिश्तों में गाँठ पड़ने के कारण क्या हो सकते हैं?

२. सज्जनों के स्वभाव का वर्णन अपने शब्दों में करें|

३. आपके अनुसार हमें सज्जनों को क्यों मनाना चाहिए?

४. वे कौन-से अच्छे गुण जिन्हें आप अपनाना चाहोगे? क्यों?

५. अपने मन से किसी एसी घटना लिखें जिसमें सज्जनों के स्वभाव की विशेषता का?वर्णन आया हो?

६. सज्जनों को मोती क्यों कहा गया होगा?